17–7–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बैठे हो। बुद्धि में है कि हम पढ़ रहे हैं विश्व का मालिक बनने लिए। कल्प पहले मिसल ही हम पढ़ रहे हैं अर्थात् अपने तन–मन–धन से अपनी बादशाही स्थापन कर रहे हैं श्रीमत पर चलकर। जो–जो जितनी अपने मत(तन)मन,धन से सेवा करेंगे वो ही उतना ही उंच पद पावेंगे। अच्छा,कन्यायें–मातायें वो तो कोई वारिस तो नहीं हैं। वर्सा तो बच्चे को ही मिलता है। धन नहीं है तो बाकी रहा तन और मन। मन को अमल(अमन) करना माना बाप को याद करना है। तन का मुख्य अंह(अंग) है मुख। उससे सर्विस करनी है। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। गीतापाठशालायें तो बहुत2 खुली हुई हैं। गीता है ही एक धर्म शास्त्र। हर एक धर्म का एक शास्त्र होता है। इन भारतवासियों के तो ढेरों शास्त्र हैं। गीता भी झूठी है। आदि सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र है श्रीमतभागवत गीता। श्री–श्री भगवान को कहा जाता है। देवतायें श्री बनते नहीं। बाप में जो गुण है वो देवताओं में नहीं हो सकता है। तुम्हारे में जो अब नालेज है वो देवताओं में तो नहीं रहेगा ना। अभी तुम अविनाशी ज्ञान रत्नों का सौदा दे रहे हो। बाप कहते हैं कि बहुत बड़ा दुकान खोलना चाहिए। तुमको बहुत फायदा होगा। खान–पान तो सबको मिलना ही है। बुद्धि में आना चाहिए रत्नों का सौदा कोई ले जावे। आते हैं खुश होकर जाते हैं। फिर बाप पास आते हैं। कहते हैं कोई सेवा?बाबा कहेंगे यह बच्चे जैसे सेव कर रहे हैं तुम भी करो। जितना धारणा में होगा उतना करके दिखावेंगे। यह है पाठशाला। पाठशाला में तो एम ऑब्जेक्ट रहती है। नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनना है। इस पर ही नाम पड़ा है तीजरी की कथा। अमरकथा। सत्यनारायण की कथा। अब तुमको बाप ने और और सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का परिचय दिया है। तो तुम धनी के बने हो। तुम वैश्यालय में थे अब शिवालय में जा रहे हो। शिवालय सतयुग को ,वैश्यालय कलियुग अंत को कहा जाता है। अब कलियुग है। कोई धन(धनी) का आस्तिक(आसरे) नहीं है। बाप को नहीं जानते हैं। तुम जानते हो कि यहां पर कितने मनुष्य हैं। सतयुग में कितने थोड़े होने चाहिए। बात तो बहुत ही सहज है। कलियुग के बाद सतयुग जरूर आवेगा। तुम बच्चों को राज(योग) सिखाकर देवी देवता धर्म की स्थापना कराता हूँ। अनेक धर्मों का विनाश भी जरूर चाहिए। पहले2 ल.ना. का राज्य चलता है। बच्चों को श्री2 की श्रीमत पर चलकर श्री बनना है। सर्व का सदगतिदाता एक है। उनको ही सतगुरू कहेंगे। बाकी सभी हैं भक्तिमार्ग के, जो कि नीचे ले आते हैं। कितनी सहज नालेज है। सिर्फ समय लगता है जन्म जन्मांतर के पाप विनाश करने के लिए याद में रहने में। बाप को याद करो और बाप ही की महिमा करो। ईश्वर बाप है यही कोई नहीं समझते हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। जितना बाप की मत पर चलेंगे उतना ही श्री माना श्रेष्ठ बनेंगे। ब्राह्मणों की अंधेरी रात। दिन के लिए फिर पढ़ते हो। कलियुग को घोर अंधेरा। सतयुग को घोर सोझरा कहेंगे। रिहर्सल नहीं करते हो तो प्वाइंट्स भूल जाते हो। प्वाइंट्स का किताब होना चाहिए। जैसे डाक्टर्स पास किताब रहते हैं त्यों ही तुम बच्चों को भी नोट्स रखने चाहिए। पढ़ाई कितनी अच्छी है। कितना अटेंशन रखना है। तुम जानते हो हमको अपने ही तन–मन–धन से अपनी ही बादशाही स्थापन करनी है। हूबहू जैसे कल्प2 करते हो। फालो फादर। उनको एक्टिविटी में चलकर फालो करना है। उस बाबा को तो पुरुषार्थ नहीं करना है। यह दादा तो तुम्हारे ही साथ है। यह है ग्रेट2 ग्रैंड फादर ;क्योंकि ब्रादरी शुरू हो जाती है। तुम्हारा सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी.....फिर मुख्य ईस्लामी,बौद्धी.....आदि होते हैं। फ्लावरेवास(फ्लावरवाज) होता है ना। इस समय तना नहीं है। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। ल. ना. का राज्य है नहीं। अब श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए। बाप को फालो.....करके उंच पद पाना चाहिए। अब गफलत करने का समय नहीं है। तुम बच्चों को कल्याणकारी बनना है। धनी के नाम पर खर्च कर दो। दुकान निकालो। जयपुर का सेंटर कितना खर्चा खा रहा है। मकान आदि भी बच्चों के लिए बनाते हैं। यहां अन्त में अच्छे2 बच्चे आवेंगे। देखेंगे कि मौत आ रहो है तो चलो बाबा पास ही मरें। भक्तिमार्ग में सब है झूठ। बाप ही सच्च2 सुनाते हैं। गुडनाइट।